कारे-कारे बादल

अशोक कुमार ढोरिया*

कारे-कारे आ रे बादल
झूम-झूम के गा रे बादल।

बरसें बूँदें छन-छन छैया
भर जाएँ सब ताल तलैया
पीपल बरगद झूम उठे सब
गायें कोयल कहीं पपैया
उनसे भी बतला रे बादल
झूम-झूम के गा रे बादल।

झूम उठें गेहूँ की बाली
कहीं झुकी सरसों की डाली
महक उठे कहीं पालक धनिया
चहक रही फूलों पे लाली
बरस-बरस महका रे बादल
झूम-झूम के गा रे बादल।

कहीं पर झींगुर तान लगायें
कहीं मेंढक टर्र-टर्र टर्रायें
तिलचट्टों की फौज चले कहीं
कहीं पतंगे भी मंडरायें
यूँ ही तू मंडरा रे बादल
झूम-झूम के गा रे बादल।

**प्राथमिक शिक्षक*, राजकीय प्राथमिक विद्यालय, तुम्बाहेड़ी (झज्जर), हरियाणा